बोध प्रेम सेवा
BRGRS
Brahma Rishi Gieta Ramayan Samaadj

Wijsheid, Liefde, Dienstbaarheid

Beschermheer Brahma Rishi Vishvatma Bawra dji Maharaadj

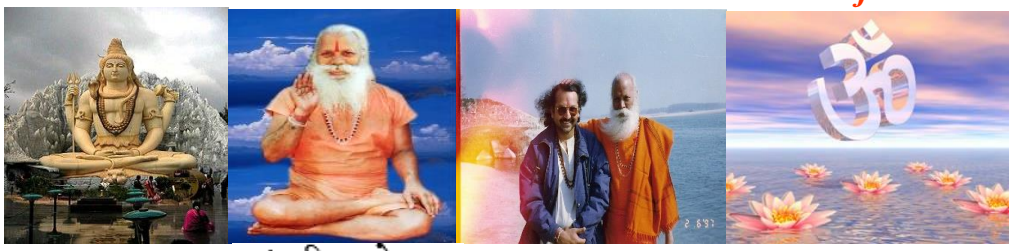

ॐ श्री गुरवे नमः

Zoetermeer, 29 maart 2026

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथ श्रीमद्भगवद्गीतामाहात्म्यम्

गीताशास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतः पुमान्।
विष्णोः पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जितः॥ १॥

जो मनुष्य शुद्धचित्त होकर प्रेमपूर्वक इस पवित्र गीताशास्त्रका पाठ करता है, वह भय और शोक आदिसे रहित होकर विष्णुधामको प्राप्त कर लेता है॥ १॥

गीताध्ययनशीलस्य प्राणायामपरस्य च।
नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च॥ २॥

जो मनुष्य सदा गीताका पाठ करनेवाला है तथा प्राणायाममें तत्पर रहता है, उसके इस जन्म और पूर्वजन्ममें किये हुए समस्त पाप निःसन्देह नष्ट हो जाते हैं॥ २॥

मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने।
सकृद्गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम्॥ ३॥

जलमें प्रतिदिन किया हुआ स्नान मनुष्योंके केवल शारीरिक मलका नाश करता है, परंतु गीताज्ञानरूप जलमें एक बार भी किया हुआ स्नान संसार-मलको नष्ट करनेवाला है॥ ३॥

Wijsheid, Liefde, Dienstbaarheid

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता॥ ४॥

जो साक्षात् कमलनाभ भगवान् विष्णुके मुखकमलसे प्रकट हुई है, उस गीताका ही भलीभाँति गान (अर्थसहित स्वाध्याय) करना चाहिये, अन्य शास्त्रोंके विस्तारसे क्या प्रयोजन है॥ ४॥

भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनिःसृतम्।
गीतागङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥ ५॥

जो महाभारतका अमृतोपम सार है तथा जो भगवान् श्रीकृष्णके मुखसे प्रकट हुआ है, उस गीतारूप गंगाजलको पी लेनेपर पुनः इस संसारमें जन्म नहीं लेना पड़ता॥ ५॥

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥ ६॥

सम्पूर्ण उपनिषदें गौके समान हैं, गोपालनन्दन श्रीकृष्ण दुहनेवाले हैं, अर्जुन बछड़ा है तथा महान् गीतामृत ही उस गौका दुग्ध है और शुद्ध बुद्धिवाला श्रेष्ठ मनुष्य ही इसका भोक्ता है॥ ६॥

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव।
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा॥

देवकीनन्दन भगवान् श्रीकृष्णका कहा हुआ गीताशास्त्र ही एकमात्र उत्तम शास्त्र है, भगवान् देवकीनन्दन ही एकमात्र महान् देवता हैं, उनके नाम ही एकमात्र मन्त्र हैं और उन भगवान्‌की सेवा ही एकमात्र कर्तव्य कर्म है॥ ७॥

Mijn zeer geappreciëerde dierbare Satsangies Jay Shri Raam/ sader pranaam, 🙏
Langs deze weg willen wij u allen ons innige dankbaarheid betuigen voor de schenkingen die jullie met blijdschap en liefdevol op mijn 68ste verjaardag hebben geschonken. Dit was een heel gezellige en heugelijke dag in mijn leven. Dankjewel u allen.
Dankzij jullie onvoorwaardelijke liefde, inzet en initiatief ben ik in staat om de kennis, wijsheid en levensfilosofie die door ons eerbiedwaardig Guruji is geven uit te kunnen dragen.
Jullie onbaatzuchtige inzet en overgave is onmisbaar voor deze boodschap.

Wijsheid, Liefde, Dienstbaarheid

Ik buig dan ook nederig aan de lotusvoeten van ons geliefde Guruji moge de zegeningen en liefde van Hem over ons vloeien. Ook wensen wij u en uw gezin een gelukkig, rust en vredig leven toe. Moge God u kennis, geluk, wijsheid en een leven vol liefde en devotie toebedelen en schenken. Tenslotte mijn innige zegen en erkenning voor mijn heel dierbare Bhawaaniji/Pracharikaji die met complete liefde en devotie haar tijd en energie ten dienste stelt voor Guruji's missie.
Ook ben ik jullie zeer erkentelijk voor de financiële bijdrage.
Uw nederige dienaar Aniroedh Parag

Dharm Pracharak

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः॥

जो पुरुष मुझमें परम प्रेम करके इस परम रहस्य-युक्त गीताशास्त्रको मेरे भक्तोंमें कहेगा, वह मुझको ही प्राप्त होगा—इसमें कोई सन्देह नहीं है॥ ६८॥

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि॥

उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करनेवाला मनुष्योंमें कोई भी नहीं है; तथा पृथ्वीभरमें उससे बढ़कर मेरा प्रिय दूसरा कोई भविष्यमें होगा भी नहीं॥ ६९॥